REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

मिथकीय नाट्य–काव्य–'सूतपुत्र'

Dr.Rajashree Tirvir

प्रास्ताविक :–

मिथक से सामान्यत: ऐसी कथाओं का अर्थ लगाया जाता है जो अलौकिक तथा अद्‌भूत होती हैं। इनमें कल्पना और यथार्थ का मेल होता है। इन कथाओं को अतीत की घटनाओं से जोडा जाता है किंतु इनके ऐतिहासिक होने के प्रमाण असंदिग्ध है, क्योंकि इनका संबंध प्राकृत मनुष्यों से न होकर अप्राकृत तथा दैविक मनुष्यों से है। इसलिए इन कथाओं को कपोल कल्पना समझा जाता था। प्राचीन काल से साहित्य मिथ का आधार लेता आया है। क्योंकि इसके भीतर संपूर्ण सामाजिक अनुभव संचित होते हैं और साहित्य भी इन्हीं अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। साहित्य की सभी विधाओं में मिथक का प्रयोग सार्थक सिद्ध होता आया है। आधुनिक युग के रचनाकारों ने मिथ में नया अर्थ भरते हुए, नये संदर्भ के साथ प्रस्तुत कर, जनजीवन को नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया हैं। मिथकों का आश्रय लेकर समग्र जीवन की व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

विनोद रस्तोगी द्वारा लिखित 'सूतपुत्र' नाट्य–काव्य का प्रकाशन काल १९७४ रहा है। इसका कथानक 'महाभारत' पर आधारित है। महाभारत के पात्रों में एक अंगारक पात्र कर्ण है और लेखक ने इस रचना में कर्ण के विशिष्ठ गुणों को उभारते हुए कर्ण के माध्यम से आज के युग की बात कहने का प्रयास किया है। इसका कथानक दो अंकों में, छ: दृश्यों में विभाजित है।

पहले अंक के प्रथम दृश्य में कर्ण और राधा के मध्य वार्तालाप होता है। राधा को माँ, माँ पुकारते हुए कर्ण घर के आँगन में आ जाता है और वहाँ पर राधा से पांडुपुत्र और कौरव शस्त्र प्रदर्शन कर अपनी शक्ति, पराक्रम, साहस और शौर्य का परिचय देंगे कहते हुए स्वयं भी अपने अस्त्र–शस्त्र का कौशल दिखाने की बात करता है तो राधा इस प्रदर्शन को राज–कुल तक सीमित बताकर, एक सूतपुत्र उनकी समानता कैसे कर सकता है यह समझाने का प्रयास करती है। किंतु कर्ण अपनी बात पर अडे रहता है और उस प्रदर्शन में भाग लेने के लिए माँ से आशिष माँगता है तो राधा भी विजयी होने का आशिर्वाद दे देती है।

दूसरा दृश्य रंग–स्थल का है, जहाँ पर द्रोणाचार्य, भीष्म, धृतराष्ट्र, विदूर आदि के समक्ष अर्जुन, दुर्योधन आदि द्वारा अस्त्र–शस्त्र प्रदर्शन को देखकर द्रोणाचार्य अपने परिश्रम को सफल मानते हैं। किंतु कर्ण उन राजकुमारों के करतब को साधारण कहते हुए वह खेल स्वयं भी दिखाने की बात कहता है। और अर्जुन को द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारता है। द्रोणाचार्य उसे शब्द वापस लेने को कहते हैं। कर्ण द्रोणाचार्य को अर्जुन को विश्व का श्रेष्ठतम धनुर्धारी बनाने के ध्येय से एकलव्य को दिक्षा दिये बिना ही गुरू दक्षिणा के रूप में उससे दाहिने हाथ का अंगूठा माँग लेने के प्रसंग का स्मरण करवाता है और अर्जुन की करतब को साधारण कहता है। इससे दुर्योधन के मन को शांति मिलती है, वह प्रसन्न हो जाता है। किंतु अर्जुन को इस बात से क्रोध आ जाता है और वह कर्ण को द्वंद्व युद्ध

करने के लिए ललकारता है। मगर भीष्म उसे शांती बनाये रखने को कहते हैं। द्रोण अर्जुन राजपुत्र है कहकर कर्ण से उसका परिचय देने को कहते हैं, क्योंकि युद्ध और प्रेम केवल समान कुल में होते हैं। यह सुनकर तुरंत दुर्योधन कर्ण को अंगदेश का राज्य देकर अंगराज बनाता है। फिर भी अर्जुन कर्ण के माता–पिता, उसके वंश का पता पूछता है तो दुर्योधन पांडवो की जन्म–कथा की याद दिलाता है। और कर्ण सूतपुत्र न होकर अंगराज हो गया है तो द्वंद्व युद्ध से अर्जुन को आपत्ती क्यों है पूछता है। कर्ण भी अपने जन्म की कथा बताकर जन्म देनेवाली नारी अवश्य उच्च कुल की होगी जिसने लोक लाज वश उसे नदी में बहा दिया होगा कहता है।[३] यह सुनकर वहाँ उपस्थित कुंती मूर्छित हो जाती है। अर्जुन उसे सूतपुत्र कहकर अपने पिता अधिरथ से रथ हांकने को सीखने की बात कहकर चला जाता है। सब प्रस्थान करते हैं। केवल कर्ण और दुर्योधन रह जाते हैं। कर्ण स्वयं को सूतपुत्र कहकर घृणा का पात्र समझता है तो दुर्योधन उसे अपना मित्र बनाना चाहता है। यह देख कर्ण उसे सुख–दुःख में साथ देने का वचन देकर पांडु–पुत्रों का दर्प–मान चूर करने का प्रण लेता है।

तीसरा दृश्य अधिरथ और राधा के गृह का आंगन का है, जहाँ राधा और कर्ण के बीच का वार्तालाप है। राधा दुर्योधन द्वारा लाक्षागृह में कुंती के साथ पांडु पुत्रों का दाह करवाने के कार्य को दुष्कर्म बताकर मानव धर्म को श्रेष्ठ बताती है। उसी समय कर्ण दुर्योधन के साथ पांचाल जाने के लिए आज्ञा मांगता है, जहाँ द्रुपदसुता का स्वयंवर होनेवाला था। राधा भी उसे द्रोपदी के साथ आने का आशीष देती है।

चौथा दृश्य भी उसी आँगन का है और तीसरे दृश्य की तरह राधा और कर्ण के मध्य का संवाद है। कर्ण को आया देख राधा हर्ष से द्रोपदी कहाँ है, स्वयंवर में क्या हुआ पूछती है। कर्ण स्वयं को अभागा, अपमानित, दुत्कारा गया हूँ कहकर स्वयंवर की घटना को बताता है कि शिशुपाल, जरासंध, शल्य जैसे महाबली–वीर धनुष्य की प्रत्यंचा चढा न पाये तो सुयोधन के कहने पर कर्ण उठकर प्रत्यंचा चढाकर लक्ष्य–वेधने ही वाला था, उसी समय द्रोपदी ने सूतपुत्र को कदापि न वरने की बात की। यह कहकर स्वयं को अपमानित मानता है। तथा पांडव जीवित है और विप्र वेश में आये पांडवों में से अर्जुन ने लक्ष्य–वेध कर द्रौपदी को पाया है यह बताता है। तथा द्रोण ने हमसे छल किया है, अर्जुन को पूर्ण विध्या दी है तथा औरों को अधूरी। भृगुवंशी मुनि परशुराम को गुरू बनाकर दिव्यास्त्र पाऊंगा, चाहे उसके लिए छल का भी आश्रय लेना पडे तो लूंगा पर रण में अर्जुन को हराऊंगा आदि अपनी माँ राधा के सम्मुख कहता है।

पाँचवाँ दृश्य मुनिश्रेष्ठ परशुराम के आश्रम का है। कर्ण और परशुराम के मध्य हुए वार्तालाप से यह स्पष्ट होता है कि कर्ण ने स्वयं को ब्राह्मण–कुमार बताकर परशुराम से ब्रह्मास्त्र विद्या का ज्ञान प्राप्त किया है। किंतु जब परशुराम विश्राम करने हेतु कर्ण के अंक में सिर रखकर सो जाते हैं तो कुछ समय के पश्चात् परशुराम निद्रा से उठकर देखते हैं कि कर्ण की जंघा पर कीट के काटने से व्रण हुआ है तथा कीट मांस को कुतर–कुतर कर अंदर धंसता गया है। यह देखकर परशुराम उस कीट को न हटाने का कारण पूछते हैं तो कर्ण बताता है कि अगर वह कीट को हटाने का प्रयास करता तो परशुराम के विश्राम में बाधा पड जाती। कर्ण की इतनी सहनशीलता, आवेश पर अधिकार तथा क्रोध पर विजय पाने की चेष्टा पर परशुराम को कर्ण के विप्र–सूत होने पर संदेह उत्पन्न हो जाता है और वे कर्ण से उसके कुल–वंश के बारे में पूछते हैं तो कर्ण सूतपुत्र होने की बात बता देता है। इससे परशुराम क्रोधित होकर कर्ण को शाप देते हैं कि वह अंतिम समय में तू ब्रह्मास्त्र विध्या भूल जायेगा।[४] तथा उसे पुत्रवत मानने के कारण स्नेहवश यह भी बता देते हैं कि जब तक तेरे हाथ में अस्त्र– शस्त्र रहेंगे, अर्जुन क्या काल भी तेरे सम्मुख नहीं टिकेगा। कर्ण भविष्य के बारे में पूछता है तो परशुराम कौरव–पांडवों के मध्य महाभारत युद्ध अनिवार्य है बताते हैं।

छटे दृश्य से पता चलता है कि द्यूत–क्रीडा में पराजित होकर पांडव वनवास भोग रहे हैं तथा दुर्योधन की ओर से कर्ण दिग्विजय करके लौट चुका है और यज्ञ के पश्चात् वह अर्जुन का वध करने की प्रतिज्ञा भी कर चुका है। यह सुनकर राधा कर्ण से पांडु–पुत्रों

से वैर–भाव त्याग देने को कहती है। द्वेष पांडवों–कौरवों में है कहकर कर्ण को प्रजा–पालन करने की सलाह देती है। किंतु कर्ण अपने अपमान, अत्याचार पर मौन नहीं रहना चाहता। उसके विरूद्ध विद्रोह करने की बात करता है। राधा के वहाँ से प्रस्थान के पश्चात् कर्ण अपनी उपासना में मग्न हो जाता है। उसी समय कर्ण के पिता सुर्यदेव वहाँ पर कर्ण को संकट से सावधान करने हेतु आ जाते हैं और बताते हैं कि अर्जुन की सुरक्षा के ध्यान से उसके पिता इंद्र भिक्षुक बन तुझसे कवच–कुंडल माँगने आ जायेंगे। ऐसी विकट परीक्षा की घड़ी में भी कर्ण सफल होने की बात कहकर अपने पिता को आश्वस्त करता है। सुर्यदेव कर्ण को आशीष देकर चले जाते हैं।

कुछ क्षणों के पश्चात् विप्र वेश में आये इंद्र दान–वीर कर्ण से कवच–कुंडल माँगते हैं। कर्ण तुरंत उसे निकाल कर दे देता है। इससे इंद्रदेव प्रसन्न हो जाते हैं और कर्ण को वर के रूप में एकघ्नी शक्ति दे देते हैं, जिसके प्रयोग से मानव और देव क्या महाकाल तक भस्म हो सकता है। किंतु इसका प्रयोग केवल एक बार कर सकेगा यह बताकर चले जाते हैं। इस तरह नाट्य–काव्य का एक अंक खत्म हो जाता है।

दूसरे अंक भी छः दृश्यों में विभक्त है। पहला दृश्य कौरव सभा का है, जहाँ धृतराष्ट्र, विधूर, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, दुर्योधन और कर्ण आसनों पर बैठे हैं और कृष्ण पांडवों का दूत बनकर शांति संदेश बताते हैं तथा वनवास से लौटे पांडवों को आधा राज्य देने को कहते हैं। इसको दुर्योधन स्वीकार नहीं कर रहा है यह देख कृष्ण केवल पाँच ग्राम की मांग करते हैं। किंतु दुर्योधन बिना युद्ध के सूत भर भी भूमि देने से इन्कार करता है। भीष्म और द्रोण भी दुर्योधन को समझाने का प्रयास करते हैं। किंतु कर्ण दुर्योधन का पक्ष लेकर बोलता है। अंत में कृष्ण वहाँ से चले जाते हैं। दुर्योधन युद्ध का प्रधान सेनापति भीष्म को बनाकर सैन्य–संचालन का कार्य सौंपता है तो भीष्म उस उत्तरादायित्व को तो स्वीकार करते हैं, मगर उनके नायकत्व में सूतपुत्र कर्ण युद्ध करें यह वे स्वीकार नहीं करेंगे यह निर्णय सुनाते हैं। कर्ण भी उस निर्णय को स्वीकारते हुए युद्ध में भीष्म धराशायी होने तक अस्त्र–शस्त्र त्यागकर युद्ध से दूर रहने को राजी हो जाते हैं।

दूसरा दृश्य कर्ण के आवास में कृष्ण और कर्ण के मध्य हुए संवाद का है। कृष्ण कर्ण की उसके जन्म की कथा याद दिलाकर पांडवों के अग्रज होने के नाते उनके पक्ष में आने को कहते हैं। पांडवों के शिविर में उसे केवल मान–सम्मान, यश–कीर्ति, वैभव ही नहीं मिलेगा, बल्कि विश्व–सुंदरी द्रौपदी भी तुम्हारी अंकशायिनी बनेगी कहते हैं।[५] किंतु कर्ण इस प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए अपने मित्र दुर्योधन का ही साथ देने के निर्णय पर अडिग रहते हैं।

तीसरा दृश्य कर्ण और कुंती का सरिता तट पर वार्तालाप का प्रसंग है। कुंती कर्ण जन्म का रहस्य बताती है[६] और लोक–लाज वश उसे सरिता में बहा देने के अपराध को भी स्वीकार करते हुए, उसका परिष्कार करने हेतु उसे पुत्र रूप में स्वीकार कर पांडव सेना का नेतृत्व करने का प्रस्ताव रखती है। कर्ण यह अपना दुर्भाग्य समझता है कि वह सूर्यपुत्र होकर भी सूतपुत्र कहलाया वह अपने माता–पिता एवं मित्र को त्यागने से इन्कार करता है यह देख कुंती याचिका बनकर कर्ण से पांडु पुत्रों का प्राण–दान माँगती है। कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडु–पुत्रों का वध न करने का उसे वचन दे देता है।

चौथे दृश्य में कर्ण और भीष्म का संवाद है। भीष्म कुरूक्षेत्र में धराशायी होकर शर–शय्या पर लेटे हुए हैं। आधी रात के समय कर्ण उनके पास आकर अस्त्र–शस्त्र धारण कर अर्जुन से प्रतिशोध लेने की भीष्म से आज्ञा मांगने आता है। भीष्म को कर्ण के जन्म की कथा ज्ञात थी। इसी कारणवश वे स्वजनों में रक्तपात नहीं करवाना चाहते थे। इसलिए वे कर्ण को हमेशा हतोत्साहित करते थे यह बताते हैं। तथा निर्भय होकर युद्ध करने की प्रेरणा देते हैं।

पाँचवा दृश्य दुर्योधन के शिविर में दुर्योधन, कर्ण और मंद्रराज शल्य का वार्तालाप प्रसंग है। यह महाभारत की सोलहवीं रात होती है। जयद्रथ, द्रोणाचार्य, भूरिश्रवा जैसे महारथी वीरगति प्राप्त कर चुके हैं। दुर्योधन पराजय की भावना से आशंकित होता है तो कर्ण उसे धीरज देता है। शल्य को अपने रथ का सारथ्य स्वीकारने को कहता

है, जैसे कृष्ण अर्जुन का सारथी है। दुर्योधन और कर्ण के अनुरोध पर वह सारथ्य स्वीकार करता है। किंतु एक शर्त भी रखता है कि अश्वों की वल्गायें हाथ में लेते ही वह मनचाही बात करेगा मगर कर्ण उसे प्रत्युत्तर नहीं करेगा। इस शर्त को कर्ण स्वीकार करता है।

छटा दृश्य महाभारत के सातवें दिन का है। कर्ण और अर्जुन के मध्य हुए युद्ध का प्रसंग है। जहाँ शल्य धर्मराज के कहने पर कर्ण को खरी–खोटी सुनाकर उसके मन को विचलित करने का प्रयास करता है। जब रथ का वाम–चक्र भुमितल में धंसता है तो कर्ण स्वयं धंसे चक्र को उठाने चला जाता है तो कृष्ण के कहने पर अर्जुन निशस्त्र कर्ण पर बाण चलाता है। कर्ण अर्जुन से धर्म–न्याय की बात करता है तो कृष्ण उसे अभिमन्यु की हत्या, पांचाली का अपमान, लाक्षागृह को भस्म करना आदि बातों का स्मरण करवाता है। फिर भी शल्य और अर्जुन अपने कुकृत्य पर कर्ण से क्षमा की याचना करते हैं। अंत में कर्ण कृष्ण की अनुमति से सूर्यलोक चला जाता है। इस तरह कर्ण की मृत्यु से नाट्य–काव्य समाप्त होता है।

कथात्मक आधार–

'सूतपुत्र' नाट्य–काव्य का कथानक 'महाभारत' के उन्हीं स्थलों से प्रभावित है, जहाँ कर्ण के जीवन से संबंधित घटनाएँ हैं। 'सूतपुत्र' के प्रथम अंक में से प्रथम, तृतीय, चतुर्थ तथा छटा दृश्य पूर्णत: कवि कल्पित है, जिसमें कर्ण और राधा के मध्य का वार्तालाप है। दूसरा दृश्य आदिपर्व के अध्याय १३४, १३५, १३६ पर आधारित है। पाँचवें दृश्य की कथा कर्ण पर्व का अध्याय ४२ से ग्रहित है। छटे दृश्य का एक प्रसंग वन पर्व में कुंडलाहरण पर्व के अध्याय ३००, ३०१, ३०२ पर आधारित है। दूसरे अंक का पहला दृश्य उद्योग पर्व के अनेक अध्यायों से संक्षिप्त रूप में ग्रहण किया गया है। दूसरा दृश्य भी उद्योग पर्व के अध्याय १४०–१४१ पर आधारित है। तीसरे दृश्य की कथा उद्योग पर्व के अध्याय १४५–१४६ से गृहित है। चौथा दृश्य भीष्म पर्व अध्याय १२२ पर आधारित है। पाँचवा दृश्य कर्ण पर्व के अध्याय ३२ और ३५ पर आधारित है। अंतिम छटे दृश्य की कथा कर्ण पर्व अध्याय ३६ से ३७ तक, ८९ से ९१ तक पर आधारित है।

परिवर्तन–परिवर्धन–

'सूतपुत्र' का कथानक महाभारत के संक्षिप्तीकरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यथासंभव संपूर्ण घटनाओं को महाभारत के अनुकूल ही चित्रित किया है। किंचित् भावों को ही कवि ने परिवर्तित किया है। कथानक में कर्ण के जीवन से संबंधित स्थलों को ही चुना है। अनावश्यक प्रसंग को छोड दिया है।

i. राधा–कर्ण का वार्तालाप प्रसंग–

महाभारत में कर्ण का पालन–पोषण करनेवाली माँ राधा के साथ कर्ण का कहीं पर भी संवाद प्रसंग नहीं है। कर्ण केवल अपनी माता राधा का नाम उल्लेख जरूर करता है।[७] किंतु सूतपुत्र में ऐसे तीन दृश्य हैं, जहाँ राधा और कर्ण के मध्य वार्तालाप का प्रसंग हैं। राधा कर्ण को अस्त्र–शस्त्र प्रदर्शन को राज–कुल तक सीमित होना बताकर वहाँ जाने से रोकने का प्रयास करती है तो दूसरी जगह कर्ण को द्रौपदी स्वयंवर में जाकर द्रौपदी से विवाह करने का आशिर्वाद दे देती है। यह प्रसंग कवि की मौलिक उद्‌भावना है।

ii. अस्त्र–शस्त्र प्रदर्शन–प्रसंग–

'सूतपुत्र' में रंगभूमि में राजकुमारों द्वारा अस्त्र–शस्त्र प्रदर्शन किया जाता है तब कर्ण वहाँ पर उपस्थित होकर अर्जुन के करतब को साधारण बताकर स्वयं भी अस्त्र कौशल प्रकट करने को उद्यत हो जाता है। किंतु द्रोणाचार्य, भीष्म तथा अर्जुन उसे सूतपुत्र कहकर अपमानित करते हैं। द्रोण उसके कुल का परिचय पूछते हैं। किंतु

'महाभारत' में कर्ण द्रोणाचार्य की आज्ञा लेकर, अर्जुन ने जो–जो अस्त्र कौशल प्रकट किया था, वह सब कर दिखाता है।[८] अर्जुन के साथ द्वंद्व युद्ध को उद्यत देखकर कृपाचार्य उससे उसके कुल का परिचय पूछते हैं। इस प्रसंग के समय द्रोण वहाँ पर उपस्थित अवश्य होते हैं। किंतु कुछ बोलते नहीं हैं। किंतु 'सूतपुत्र' में द्रोण को ही कर्ण को अधिक अपमानित करते हुए चित्रित किया है। यह देख कर्ण उन्हें एकलव्य प्रसंग की याद दिलाकर अर्जुन के प्रति उनके मोह को बताता है। महाभारत में यह प्रसंग नहीं है। 'महाभारत' में कृपाचार्य कर्ण के शौर्य को देखकर कुल परंपरा की आड लेकर हतप्रभ करते हैं। इसका उत्तर कृपाचार्य को दुर्योधन देता है। किंतु 'सूतपुत्र' में स्वयं कर्ण ने कुल गोत्र को व्यर्थ कहकर पौरूष को ही वास्तविक गुण माना है।

iii. परशुराम द्वारा कर्ण को शाप देने का प्रसंग–

नाट्य–काव्य में रंगस्थल में अपमानित कर्ण दिव्यास्त्र का ज्ञान पाने हेतु परशुराम के पास जाता है और स्वयं को विप्र बताकर छल से परशुराम से दिव्यास्त्र विद्या प्राप्त कर लेता है। किंतु जब परशुराम विश्राम हेतु उसके अंक में सीर रखकर सो जाते हैं। उस समय एक कीट आकर कर्ण की जंघा को कुतरते हुए अंदर धंसने से रक्त–स्त्राव होने लगता है। फिर भी गुरू के विश्राम में बाधा न पडे इसलिए कर्ण उसे हटाने की चेष्टा नहीं करता। परशुराम नींद से उठकर रक्त–स्त्राव देखते हैं। उन्हें कर्ण विप्र–पुत्र होने की शंका उत्पन्न होती है। यह देख कर्ण सूतपुत्र होने का भेद खोल देता है। इससे रूष्ट होकर परशुराम उसे अंतिम समय में ब्रह्मास्त्र विद्या भूल जाने का शाप दे देते हैं। महाभारत में राजकुमारों द्वारा शस्त्र प्रदर्शन के पश्चात् कर्ण का परशुराम से विद्या ग्रहण करने का प्रसंग वर्णित नहीं है। किंतु महाभारत युद्ध में संतप्त कर्ण शल्य को परशुराम द्वारा प्राप्त हुए शाप की कथा सुनाता है। तथा अर्जुन का हित चाहनेवाले इंद्र ने कर्ण के कार्य में विघ्न डालने हेतु कीडे के रूप में आकर जाँघ को काट कर घाव करने का वर्णन है।[९]

iv. सूर्य द्वारा कर्ण को सावधान करवाना–

'सूतपुत्र' में कर्ण के समक्ष स्वयं सूर्यदेव आकर सावधान कराते हुए कहते हैं कि इंद्रदेव अपने पुत्र अर्जुन की सुरक्षा के ध्यान से भिक्षुक बन तुझसे अभेध्य कवच–कुंडल मांगेंगे तथा सूर्यदेव देव–कुल की इस प्रवंचना पर लज्जा प्रकट कर चले जाते हैं। किंतु महाभारत में सूर्यदेव कर्ण को ब्राह्मण वेश में स्वप्न में दर्शन देकर इंद्र को कवच–कुंडल न देने के लिए सचेत करते हैं। फिर भी दानवीर कर्ण आग्रहपूर्वक कवच–कुंडल देने का निश्चय करता है। यह देख सूर्य कर्ण को कवच–कुंडल देकर इंद्र की अमोघ शक्ति मांगने की सलाह दे देते हैं।[१०]

v. इंद्र द्वारा कर्ण से कवच–कुंडल माँगने का प्रसंग–

'सूतपुत्र' में विप्र वेश में आये इंद्र कर्ण से याचक बनकर कवच–कुंडल माँगते हैं तो कर्ण तत्क्षण वह निकाल कर दे देता है। कर्ण अपनी सुरक्षा, अजेयता के उपकरण को भी दान में दे रहा है यह देख इंद्र प्रसन्न हो जाते हैं और कर्ण को एकघ्नी शक्ति दे देते हैं। 'महाभारत' में ब्राह्मण के छद्मवेश में छिपकर आये इंद्र कर्ण से कवच–कुंडल माँगते हैं तो सर्वप्रथम कर्ण कवच–कुंडल देने से इन्कार करते हुए उसके बदले में घर बनाने के लिए भूमि, सुंदर तरूण स्त्रियाँ, बहुत सी गौएँ, खेत आदि देने की इच्छा प्रकट करता है।[११] किंतु इंद्र उसे अस्वीकार कर केवल कवच–कुंडल माँगते हैं। कर्ण भी बदले में कुछ लेकर ही कवच–कुंडल देना चाहते हैं यह देखकर इंद्र अपने वज्र के अतिरिक्त अन्य कोई भी आयुध माँगने को कहते हैं। तब कर्ण इंद्र की अमोघ शक्ति माँगता है और शर्त के अनुसार दोनों उन वस्तुओं का विनिमय करते हैं।

vi. श्रीकृष्ण शांति दूत बनकर पांडवों के लिए पाँच ग्राम माँगने का प्रसंग–

'सूतपुत्र' में श्रीकृष्ण कौरव सभा में शांति दूत के रूप में प्रस्तुत होकर वनवास से लौटे पांडवों को आधा राज्य देकर उन्हें फिर स्वीकारने को कहते हैं। किंतु दुर्योधन उनका अधिकार देने से इन्कार कर रहा है यह देखकर श्रीकृष्ण केवल पाँच ग्राम उनके लिए माँगते हैं। फिर भी दुर्योधन बिना युद्ध के सूत भर भी भूमि देने से इन्कार करता है। 'महाभारत' में श्रीकृष्ण पांडवों को उनका राज्य प्रसन्नतापूर्वक लौटा देने को कहते हैं। पाँच ग्राम माँगने का प्रसंग महाभारत में नहीं है।

vii. कृष्ण–कर्ण के मध्य का संवाद प्रसंग–

'सूतपुत्र' में कृष्ण कर्ण के आवास में आकर कर्ण को पांडव पुत्र बताकर पांडवों के पक्ष से युद्ध करने को कहते हैं। किंतु कर्ण अपने बंधुओं से बढ़कर भी मित्र दुर्योधन है बताते हुए कौरवों के पक्ष में ही रहकर युद्ध करने का निर्णय बताता है।[१२] कृष्ण कर्ण को पांडव पक्ष से मान–सम्मान, यश, कीर्ति, वैभव का प्रलोभन देते हुए द्रौपदी भी तुम्हारी अंकशायिनी होगी बताते हैं। मगर कर्ण स्वयं को भोगी–विलासी न होकर एक पत्नी–व्रत हूँ बताता है।[१३] महाभारत में कृष्ण द्वारा कर्ण को समझाने का प्रसंग कर्ण के आवास में न होकर श्रीकृष्ण कर्ण को रथ पर बिठाकर हस्तिनापुर से बाहर ले जाते हैं। तब कृष्ण कर्ण को पांडव पक्ष में आ जाने के लिए समझाते हैं।[१४] तथा कृष्ण द्वारा कर्ण की अंकशायिनी द्रौपदी भी बनेगी बताने का इस तरह का प्रस्ताव प्रसंग 'महाभारत' में नहीं है। सूतपुत्र में कर्ण स्वयं को एक पत्नी–व्रत हूँ बताता है। किंतु 'महाभारत' में उसका सूतजाति की कई कन्याओं से विवाह कर, उनसे पुत्र और पौत्र भी पैदा होने की बात बताई गई है।[१५]

viii. सरिता तट पर कर्ण–कुंती संवाद प्रसंग–

'सूतपुत्र' में महाभारत में वर्णित प्रसंग के समान सरिता तट पर कुंती कर्ण को अपना प्रथम पुत्र बताकर उससे पांडव पक्ष में आने का अनुरोध करती है। किंतु कर्ण अस्वीकार करता है। उसकी अवहेलना करता है। तब कुंती याचिका बन पांडु–पुत्रों का प्राण–दान माँगती है। कर्ण अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडु–पुत्रों का वध न करने का वचन देता है। 'महाभारत' में कर्ण पांडव पक्ष में आने से इन्कार करते हुए कुंती ने उसके पास आने का जो कष्ठ उटाया उसके लिए वह स्वयं अर्जुन के अतिरिक्त अन्य पांडु–पुत्रों का वध न करने का निर्णय बताता है।[१६]

ix. कर्ण–भीष्म संवाद प्रसंग–

कुरूक्षेत्र में आधी रात में शर शय्या पर भीष्म सो रहे होते हैं तब उनसे मिलने कर्ण वहाँ पर उपस्थित हो जाता है। इस तरह का प्रसंग महाभारत में भी देखा जाता है। केवल उनके संवादों में कवि ने परिवर्तन किया है। जैसे 'सूतपुत्र' में भीष्म कर्ण को सुयोधन से बात कर शांति–स्थापना करने की बात कहते हैं। कर्ण युद्ध की अनिवार्यता बताता है तो भीष्म सैन्य–संचालन करने को कहते हैं। किंतु कर्ण द्रोण के रहते नायक बनने से इन्कार करता है तथा उनके नेतृत्व में युद्ध करने के लिए भीष्म से आशिष माँगता है। 'महाभारत' में भीष्म कर्ण को पांडव उसके सगे भाई है बताकर उनसे मिल जाने को कहते हैं।[१७] कर्ण इसे अस्वीकार करता है तो उसे स्वर्गप्राप्ती की इच्छा से युद्ध करने की आज्ञा देते हैं।

x. कर्ण की मृत्यु का प्रसंग–

'सूतपुत्र' में शल्य के सारथ्य में जब कर्ण अर्जुन से युद्ध कर रहा होता है तब रथ का चक्र भूमितल में धंस जाता है तो कर्ण शल्य से धंसा चक्र भूमितल से निकालने को कहता है तो शल्य उसे उसका दास नहीं कहकर इन्कार करता है तो कर्ण स्वयं रथ से उतरकर धंसा चक्र निकालने का प्रयास करते हैं। 'महाभारत' में कर्ण शल्य से न कहकर स्वयं ही रथ से उतरकर धंसा चक्र निकालने का प्रयास करता है। 'सूतपुत्र' में निशस्त्र कर्ण पर

जब अर्जुन बाण चलाता है, तब कर्ण प्राण त्याग करते समय अर्जुन के उस कृत्य पर निंदा करते हुए धर्म–न्याय की याद दिलाता है। तब कृष्ण भीम को हलाहल देना, लाक्षागृह को भस्म कर पांडवों को मारने का प्रयास करना, द्रौपदी का अपमान तथा अभिमन्यु की मृत्यु आदि बातें बताकर कौरवों द्वारा किये गये अन्याय की याद दिलाते हैं। 'महाभारत' में यह संवाद कर्ण पर अर्जुन बाण चलाकर मारने से पहले घटित होता है। नाट्य–काव्य में कर्ण प्राण–त्याग करते समय शल्य तथा अर्जुन कर्ण से अपने कुकृत्य पर लज्जा प्रकट करते हुए क्षमा की याचना करते हैं। 'महाभारत' में शल्य तथा अर्जुन द्वारा क्षमा–याचना का प्रसंग नहीं है।

'महाभारत' में कवि ने कर्ण की महानता के प्रति अन्याय किया है। विनोद रस्तोगी ने 'सूतपुत्र' नाट्य–काव्य के माध्यम से कर्ण का चित्र भारतीय जनता के हृदय में मित्रता, नैतिकता, दानशीलता तथा वीरता के प्रतीक के रूप में अंकित किया है। महाभारतकार ने सत्य की रक्षा करते हुए भी पांडवों के प्रति पक्षपात किया है। किंतु विनोद रस्तोगी ने बडी निर्भिकता तथा निष्पक्षता से कर्ण के वास्तविक चरित्र को प्रस्तुत किया है। कवि ने कर्ण के माध्यम से व्यक्ति का महत्व उसकी जाति, वंश अथवा गोत्र पर निर्भर न होकर उसके सत्कर्मों पर निर्भर होता है यह दर्शाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत नाट्य–काव्य का कथ्य प्रासंगिकता की दृष्टि से उल्लेखनीय है।

संदर्भ ग्रंथ –

१. डॉ.विनय – एक पुरूष और, पूर्वकथन (प्रथम संस्करण की भूमिका)
२. विद्यानिवास मिश्र – महाभारत का काव्यार्थ – पृ सं – १३
३. नारी वह होगी अवश्य उच्च कुल की
जिसने मुझे जन्म दिया अवांछित रूप से–
भंग मर्यादा कर समाज और वंश की;
और लोक–लाज–अपवाद से बचने को–
नदी की तरंगों में मुझको बहा दिया
क्रूर–निर्मोहिनी बन।" – सूतपुत्र – पृ सं – २७
४. "जिस मनोरथ को लेकर तू आया था
पूरा कभी होगा नहीं!
मेरी सिखाई हुई ब्रह्मास्त्र–विध्या
तू भूल जायेगा अंतिम समय में।" – सूतपुत्र – पृ सं – ४६
५. "विश्व सुंदरी द्रौपदी भी बनेगी–
तुम्हारी अंकशायिनी
कुंती के पुत्र हो,
तुम्हारा भी उस पर समान अधिकार है"–सूतपुत्र – पृ सं – ८०
६. "ऋषि दुर्वासा ने प्रसन्न हो सेवा से–
दिये मुझे पांच मंत्र
जिनसे आवाहन कर सकती थी देवों का
कौतूकवश मैंने आवाहन किया सूर्य का
...दिनकर ने मुझको–
प्रदान मातृत्व किया;
और उनका तेज–पुत्र बन तू जन्मा" –सूतपुत्र – पृ सं – ८७
७. "राधेयोऽहमाधिरथि: कर्णस्त्वानभिवादये।"

–महाभारत, उद्योगपर्व – अध्याय – १४५, श्लोक १
८. "ततो द्रोणाभ्यनुज्ञात: कर्ण: प्रियरण: सदा।
यत कृतं तत्र पार्थेन तच्चकार महाबल:।।"
महाभारत – आदि पर्व – अध्याय–१३५, श्लोक – १२
९. "अवसं वै ब्राह्मणच्छ झानाहं रामे पुरा दिव्यमस्त्रं चिकीर्षु:
तत्रापि मे देवराजेन विघ्नो हितार्थिना फाल्गुनस्यैव शल्य॥
कृतो विभेदेन ममोरुमेत्य प्रषिश्य कीटस्थ तनुं विरूपाम्
ममोरूमेत्य प्रबिभेद कीट: सुप्ते गुरौ तत्र शिरो निधाय॥"
– महाभारत – कर्ण पर्व – अध्याय – ४२ – श्लोक – ४–५
१०. "अमोघा देहि मे शक्तिममित्रविनिबर्हिणीम्।
दास्यामि ते सहस्त्राक्ष कुंडले वर्म चोत्तमम्॥ – महाभारत , वनपर्व, अध्याय–३०२, श्लोक – १५
११. "अवनिं प्रमदा गाश्च निवामं बहुवार्षिकम।
तत् ते विप्र प्रदास्यामि न तु वर्म सकुंडलम्॥ – महाभारत , वनपर्व, अध्याय–३१०, श्लोक – ०६
१२. "मेरे लिए तो सुयोधन मात्र मित्र नहीं
केशव! वह निश्चय सहोदरों से बढ़कर है।" - सूतपुत्र – पृ सं – ७९
13. "पाणिग्रहण किया मैंने सूतपुत्री का
मेरी अंकशायिनी वह सती और साध्वी है।
एक पत्नी–व्रत हूँ
न विचलित कर पायेगी
द्रौपदी के रूप–लावण्य की ज्वाला वह।" – सूतपुत्र – पृ सं – ८०
14. "राजपुत्रै: परिवृतस्तथा भृत्यैश्च संजय।
उपारोय्य रथे कर्ण निर्यातो सधुसूदन:॥
किमब्रवीदमेयात्मा राधेयं परवीरहा।
कानि सांत्वानि गोविंद: सूतपुत्रे प्रयुक्तवान्॥" - महाभारत – उद्योगपर्व– अध्याय ,१४०, श्लोक १,२
15. भार्याश्चोढा मम प्राप्ते यौवने तत्पररिग्रहात्।
तासु पुत्राश्च पौत्राश्च मम जाता जनार्दन। महाभारत, उद्योगपर्व, अध्याय – १४१ – श्लोक – १०,११
16. "न च तेऽच समारंभो मयिमोघो भविष्यति।
वध्यान विषह्यान् संग्रामे न हनिष्यामि ते सुतान्॥
युधिष्ठिरं च भीमं च यमौ चैवार्जुनादृते।
अर्जुनेन समं युद्धमपि यौधिष्ठिरे बले॥" –महाभारत, उद्योगपर्व, अध्याय – १४६ – श्लोक –२०,२१
17. "सोदर्या: पांडवा वीरा भ्रातरस्तेऽरिसूदन।
संगच्छ तैर्महावाहो मम चेदिच्छसि प्रियम्॥"
–महाभारत –भीष्मपर्व–अध्याय – १२२ –श्लोक – २१

LBP PUBLICATION